

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

Surah 5 — Al-Maaida (The Table) · Medinan · 120 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ أَوْفُوا ۚ بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُمْ
بِهَيْمَةِ الْأَنْعَمِ إِلَّا مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا
يُرِيدُ

ऐ ईमानदारों (अपने) इकरारों को पूरा करो (देखो) तुम्हारे वास्ते चौपाए जानवर हलाल कर दिये गये उन के सिवा जो तुमको
पढ़ कर सुनाए जाएंगे हलाल कर दिए गए मगर जब तुम हालते एहराम में हो तो शिकार को हलाल न समझना बेशक खुदा
जो चाहता है हुक्म देता है

2

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ لَا تَحِلُّوا ۚ شَعِيرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَئِدَ
وَلَا ءَامِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ فَضْلًا ۚ مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ
فَأَصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ أَن صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَن
تَعْتَدُوا ۚ ۚ وَتَعَاوَنُوا ۚ عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَعَاوَنُوا ۚ عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدُونِ ۚ
وَآتَّقُوا ۚ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

ऐ ईमानदारों (देखो) न खुदा की निशानियों की बेतौक्रीरी करो और न हुरमत वाले महिने की और न कुरबानी की और न पट्टे
वाले जानवरों की (जो नज़रे खुदा के लिए निशान देकर मिना में ले जाते हैं) और न खानाए काबा की तवाफ़ (व ज़ियारत) का
क्रस्द करने वालों की जो अपने परवरदिगार की खुशनूदी और फ़ज़ल (व करम) के जोयाँ हैं और जब तुम (एहराम) खोल दो तो
शिकार कर सकते हो और किसी कबीले की यह अदावत कि तुम्हें उन लोगों ने खानाए काबा (में जाने) से रोका था इस जुर्म में
न फँसवा दे कि तुम उनपर ज्यादाती करने लगो और (तुम्हारा तो फ़र्ज यह है कि) नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद
किया करो और गुनाह और ज्यादाती में बाहम किसी की मदद न करो और खुदा से डरते रहो (क्योंकि) खुदा तो यकीनन बड़ा
सख्त अज़ाब वाला है

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۖ وَالْمُنْخَنِقَةُ
وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبْعُ إِلَّا مَا ذُكِّرْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى
النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا ۚ بِالْأَزْلَمِ ۚ ذَلِكُمْ فِسْقٌ ۚ الْيَوْمَ يَنْسُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْ
دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنَ ۚ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتِمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي
وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرِ مُتَجَانِفٍ ۖ لِإِثْمٍ ۖ ۚ
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ

(लोगों) मरा हुआ जानवर और खून और सुअर का गोश्त और जिस (जानवर) पर (जिबाह) के वक्त खुदा के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया जाए और गर्दन मरोड़ा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और जो कुएं (वगैरह) में गिरकर मर जाए और जो सींग से मार डाला गया हो और जिसको दरिन्दे ने फाड़ खाया हो मगर जिसे तुमने मरने के क़ब्त जिबाह कर लो और (जो जानवर) बुतों (के थान) पर चढ़ा कर जिबाह किया जाए और जिसे तुम (पाँसे) के तीरों से बाहम हिस्सा बाँटो (शरज़ यह सब चीज़ें) तुम पर हाराम की गयी हैं ये गुनाह की बात है (मुसलमानों) अब तो कुफ़्कार तुम्हारे दिन से (फिर जाने से) मायूस हो गए तो तुम उनसे तो डरो ही नहीं बल्कि सिर्फ़ मुझी से डरो आज मैंने तुम्हारे दिन को कामिल कर दिया और तुमपर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे (इस) दिने इस्लाम को पसन्द किया पस जो शरख़ भूख़ में मजबूर हो जाए और गुनाह की तरफ़ माएल भी न हो (और कोई चीज़ खा ले) तो खुदा बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ ۚ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۚ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۚ فَكُلُوا ۚ مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا ۚ أَسْمَ
اللَّهِ عَلَيْهِ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

(ऐ रसूल) तुमसे लोग पूछते हैं कि कौन (कौन) चीज़ उनके लिए हलाल की गयी है तुम (उनसे) कह दो कि तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल की गयीं और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिए सधा रखें है और जो (तरीके) खुदा ने तुम्हें बताये हैं उनमें के कुछ तुमने उन जानवरों को भी सिखाया हो तो ये शिकारी जानवर जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़ रखें उसको (बेताम्मुल) खाओ और (जानवर को छोड़ते वक्त) खुदा का नाम ले लिया करो और खुदा से डरते रहो (क्योंकि) इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمْ الطَّيِّبُ ۚ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ
حِلٌّ لَهُمْ ۚ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ
مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي
أَخْدَانٍ ۚ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ ۚ وَهُوَ فِي آخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ

आज तमाम पाकीज़ा चीजें तुम्हारे लिए हलाल कर दी गयी हैं और अहले किताब की खुश्क चीजें गेहूं (वगैरह) तुम्हारे लिए हलाल हैं और तुम्हारी खुश्क चीजें गेहूं (वगैरह) उनके लिए हलाल हैं और आज़ाद पाक दामन औरतें और उन लोगों में की आज़ाद पाक दामन औरतें जिनको तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है जब तुम उनको उनके मेहर दे दो (और) पाक दामिनी का इरादा करो न तो खुल्लम खुल्ला ज़िनाकारी का और न चोरी छिपे से आशनाई का और जिस शख्स ने ईमान से इन्कार किया तो उसका सब किया (धरा) अकारत हो गया और (तुलफ़ तो ये है कि) आखेरत में भी वही घाटे में रहेगा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا ۚ وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا ۚ بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا ۚ
فَاطَّهَّرُوا ۚ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ
لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا ۚ مَاءً ۚ فَتَيَمَّمُوا ۚ صَعِيدًا طَيِّبًا ۚ فَاْمْسَحُوا ۚ
بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ ۚ وَلَكِنْ يُرِيدُ
لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ ۚ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

ऐ ईमानदारों जब तुम नमाज़ के लिये आमादा हो तो अपने मुंह और कोहनियों तक हाथ धो लिया करो और अपने सरों का और टखनों तक पाँवों का मसाह कर लिया करो और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो तुम तहारत (गुस्ल) कर लो (हाँ) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से किसी को पैखाना निकल आए या औरतों से हमबिस्तरी की हो और तुमको पानी न मिल सके तो पाक खाक से तैमूम कर लो यानि (दोनों हाथ मारकर) उससे अपने मुंह और अपने हाथों का मसा कर लो (देखो तो खुदा ने कैसी आसानी कर दी) खुदा तो ये चाहता ही नहीं कि तुम पर किसी तरह की तंगी करे बल्कि वो ये चाहता है कि पाक व पाकीज़ा कर दे और तुमपर अपनी नेअमते पूरी कर दे ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ

7

وَأَذْكُرُوا ۚ نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

और जो एहसानात खुदा ने तुमपर किए हैं उनको और उस (एहद व पैमान) को याद करो जिसका तुमसे पक्का इकरार ले चुका है जब तुमने कहा था कि हमने (एहकामे खुदा को) सुना और दिल से मान लिया और खुदा से डरते रहो क्योंकि इसमें ज़रा भी शक नहीं कि खुदा दिलों के राज़ से भी बाख़बर है

8

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ كُونُوا ۚ قَوِّمِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلَىٰ ءَلَّا تَعْدِلُوا ۚ ۚ أَعْدِلُوا ۚ هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

ऐ ईमानदारों खुदा (की खुशनूदी) के लिए इन्साफ़ के साथ गवाही देने के लिए तैयार रहो और तुम्हें किसी कबीले की अदावत इस जुर्म में न फँसवा दे कि तुम नाइन्साफी करने लगो (खबरदार बल्कि) तुम (हर हाल में) इन्साफ़ करो यही परहेज़गारी से बहुत करीब है और खुदा से डरो क्योंकि जो कुछ तुम करते हो (अच्छा या बुरा) खुदा उसे ज़रूर जानता है

9

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّٰلِحَاتِ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए खुदा ने वायदा किया है कि उनके लिए (आखिरत में) मग़फ़ेरा और बड़ा सवाब है

10

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

और जिन लोगों ने कुफ़र इस्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह जहन्नुमी हैं (

11

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَذْكُرُوا ۚ نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌ ۚ أَن يَبْسُطُوا ۚ إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

ऐ ईमानदारों खुदा ने जो एहसानात तुमपर किए हैं उनको याद करो और ख़ूसून जब एक कबीले ने तुम पर दस्त दराज़ी का इरादा किया था तो खुदा ने उनके हाथों को तुम तक पहुंचने से रोक दिया और खुदा से डरते रहो और मोमिनीन को खुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए

﴿ وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۖ ﴾ ﴿ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۚ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۖ لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ ۚ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ﴾ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ

और इसमें भी शक नहीं कि खुदा ने बनी इसराईल से (भी ईमान का) एहद व पैमान ले लिया था और हम (खुदा) ने इनमें के बारह सरदार उनपर मुकर्रर किए और खुदा ने बनी इसराईल से फरमाया था कि मैं तो यकीनन तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम भी पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और हमारे पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और उनकी मदद करते रहो और खुदा (की खुशनूदी के वास्ते लोगों को) कर्जे हसना देते रहो तो मैं भी तुम्हारे गुनाह तुमसे ज़रूर दूर करूँगा और तुमको बेहिश्त के उन (हरे भरे) बागों में जा पहुंचाऊँगा जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरें जारी हैं फिर तुममें से जो शख्स इसके बाद भी इन्कार करे तो यकीनन वह राहे रास्त से भटक गया

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً ﴿ ۙ ﴾ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ﴿ ۙ ﴾ وَنَسُوا ﴿ ۙ ﴾ حَظًّا ﴿ ۙ ﴾ مِمَّا ذُكِّرُوا ﴿ ۙ ﴾ بِهِ ﴿ ۙ ﴾ وَلَا تَزَالُ تَطَّلُعُ عَلَى خَائِنَةٍ ﴿ ۙ ﴾ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا ﴿ ۙ ﴾ مِّنْهُمْ ﴿ ۙ ﴾ فَأَعْفُ عَنْهُمْ وَأَصْفَحْ ﴿ ۙ ﴾ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

पस हमने उनकी एहद शिकनी की वजह से उनपर लानत की और उनके दिलों को (गोया) हमने खुद सख्त बना दिया कि (हमारे) कलमात को उनके असली मायनों से बदल कर दूसरे मायनों में इस्तेमाल करते हैं और जिन जिन बातों की उन्हें नसीहत की गयी थी उनमें से एक बड़ा हिस्सा भुला बैठे और (ऐ रसूल) अब तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा एक न एक की ख्यानत पर बराबर मुत्तेला होते रहते हो तो तुम उन (के कसूर) को माफ़ कर दो और (उनसे) दरगुज़र करो (क्योंकि) खुदा एहसान करने वालों को ज़रूर दोस्त रखता है

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا ﴿ ۙ ﴾ إِنَّا نَصْرِيَّ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا ﴿ ۙ ﴾ حَظًّا ﴿ ۙ ﴾ مِمَّا ذُكِّرُوا ﴿ ۙ ﴾ بِهِ ﴿ ۙ ﴾ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ ﴿ ۙ ﴾ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ

और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी हैं उनसे (भी) हमने ईमान का एहद (व पैमान) लिया था मगर जब जिन जिन बातों की उन्हें नसीहत की गयी थी उनमें से एक बड़ा हिस्सा (रिसालत) भुला बैठे तो हमने भी (उसकी सज़ा में) क़यामत तक उनमें बाहम अदावत व दुश्मनी की बुनियाद डाल दी और खुदा उन्हें बहुत जल्द (क़यामत के दिन) बता देगा कि वह क्या क्या करते थे

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ۖ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ ۖ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ۖ

ऐ अहले किताब तुम्हारे पास हमारा पैगम्बर (मोहम्मद सल्ल) आ चुका जो किताबे खुदा की उन बातों में से जिन्हें तुम छुपाया करते थे बहुतेरी तो साफ़ साफ़ बयान कर देगा और बहुतेरी से (अमदन) दरगुज़र करेगा तुम्हारे पास तो खुदा की तरफ़ से एक (चमकता हुआ) नूर और साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब (कुरान) आ चुकी है

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ ۖ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ ۖ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ

जो लोग खुदा की खुशनूदी के पाबन्द हैं उनको तो उसके ज़रिए से राहे निजात की हिदायत करता है और अपने हुक्म से (कुफ़र की) तारीकी से निकालकर (ईमान की) रौशनी में लाता है और राहे रास्त पर पहुंचा देता है

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ ۖ وَفِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ

जो लोग उसके क़ायल हैं कि मरियम के बेटे मसीह बस खुदा हैं वह ज़रूर काफ़िर हो गए (ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि भला अगर खुदा मरियम के बेटे मसीह और उनकी माँ को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको मार डालना चाहे तो कौन ऐसा है जिसका खुदा से भी ज़ोर चले (और रोक दे) और सारे आसमान और ज़मीन में और जो कुछ भी उनके दरमियान में है सब खुदा ही की सल्तनत है जो चाहता है पैदा करता है और खुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर है

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصْرَىٰ نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبُّهُ ۖ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۖ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۖ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ

और नसरानी और यहूदी तो कहते हैं कि हम ही खुदा के बेटे और उसके चहेते हैं (ऐ रसूल) उनसे तुम कह दो (कि अगर ऐसा है) तो फिर तुम्हें तुम्हारे गुनाहों की सज़ा क्यों देता है (तुम्हारा ख्याल लगो है) बल्कि तुम भी उसकी मख़लूक़ात से एक बशर हो खुदा जिसे चाहेगा बख़ देगा और जिसको चाहेगा सज़ा देगा आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों के दरमियान में है सब खुदा ही का मुल्क है और सबको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ऐ अहले किताब जब पैग़म्बरों की आमद में बहुत रूकावट हुई तो हमारा रसूल तुम्हारे पास आया जो एहकामे खुदा को साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम कहीं ये न कह बैठो कि हमारे पास तो न कोई खुशख़बरी देने वाला (पैग़म्बर) आया न (अज़ाब से) डराने वाला अब तो (ये नहीं कह सकते क्योंकि) यक़ीनन तुम्हारे पास खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला पैग़म्बर आ गया और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ ۖ يَقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا ۖ وَءَاتَاكُمْ مَّا لَمْ يُوْتِ أَحَدٌ مِّنَ الْعَالَمِينَ

ऐ रसूल उनको वह वक्त याद (दिलाओ) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा था कि ऐ मेरी क़ौम जो नेअमते खुदा ने तुमको दी है उसको याद करो इसलिए कि उसने तुम्हीं लोगों से बहुतेरे पैग़म्बर बनाए और तुम ही लोगों को बादशाह (भी) बनाया और तुम्हें वह नेअमतें दी हैं जो सारी खुदायी में किसी एक को न दीं

يَقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا ۖ عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ

ऐ मेरी क़ौम (शाम) की उस मुक़द्दस ज़मीन में जाओ जहाँ खुदा ने तुम्हारी तक़दीर में (हुकूमत) लिख दी है और दुश्मन के मुकाबले पीठ न फेरो (क्योंकि) इसमें तो तुम खुद उलटा घाटा उठाओगे

قَالُوا ۖ يَمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا ۖ جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا ۖ مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا ۖ مِنْهَا فَإِنَّا دُخُلُونَ

वह लोग कहने लगे कि ऐ मूसा इस मुल्क में तो बड़े ज़बरदस्त (सरकश) लोग रहते हैं और जब तक वह लोग इसमें से निकल न जाएं हम तो उसमें कभी पाँव भी न रखेंगे हों अगर वह लोग खुद इसमें से निकल जाएं तो अलबत्ता हम ज़रूर जाएंगे

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنِعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا أُدْخِلُوا ۖ عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غُلَبُونَ ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا ۖ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

(मगर) वह आदमी (यूशा कालिब) जो खुदा का खौफ़ रखते थे और जिनपर खुदा ने खास अपना फ़ज़ल (करम) किया था बेधड़क बोल उठे कि (अरे) उनपर हमला करके (बैतुल मुक़दस के फाटक में तो घुस पड़ो फिर देखो तो यह ऐसे बोदे हैं कि) इधर तुम फाटक में घुसे और (ये सब भाग खड़े हुए और) तुम्हारी जीत हो गयी और अगर सच्चे ईमानदार हो तो खुदा ही पर भरोसा रखो

قَالُوا ۖ يَمُوسَىٰ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا ۖ مَا دَامُوا ۖ فِيهَا ۖ فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ

वह कहने लगे एक मूसा (चाहे जो कुछ हो) जब तक वह लोग इसमें हैं हम तो उसमें हरगिज़ (लाख बरस) पाँव न रखेंगे हों तुम जाओ और तुम्हारा खुदा जाए ओर दोनों (जाकर) लड़ो हम तो यहीं जमे बैठे हैं

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ

तब मूसा ने अर्ज़ की खुदावन्दा तू खूब वाकिफ़ है कि अपनी ज़ाते खास और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा क़ाबू नहीं बस अब हमारे और उन नाफ़रमान लोगों के दरमियान जुदाई डाल दे

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۖ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ

हमारा उनका साथ नहीं हो सकता (खुदा ने फ़रमाया) (अच्छा) तो उनकी सज़ा यह है कि उनको चालीस बरस तक की हुकूमत नसीब न होगा (और उस मुद्दते दराज़ तक) यह लोग (मिस्र के) जंगल में सरगर्दों रहेंगे तो फिर तुम इन बदचलन बन्दों पर अफ़सोस न करना

﴿۱﴾ وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَىٰ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا ۖ فَتَقَبَّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ
مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۚ ﴿۲﴾ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ

(ऐ रसूल) तुम इन लोगों से आदम के दो बेटों (हाबील, काबील) का सच्चा क़स्द बयान कर दो कि जब उन दोनों ने खुदा की दरगाह में नियाज़ें चढ़ाई तो (उनमें से) एक (हाबील) की (नज़र तो) कुबूल हुई और दूसरे (काबील) की नज़र न कुबूल हुई तो (मारे हसद के) हाबील से कहने लगा मैं तो तुझे ज़रूर मार डालूंगा उसने जवाब दिया कि (भाई इसमें अपना क्या बस है) खुदा तो सिर्फ परहेज़गारों की नज़र कुबूल करता है

لَئِنْ ﴿۳﴾ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا ﴿۴﴾ بِبَاسٍ ﴿۵﴾ يَدِي إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ﴿۶﴾ إِنَّي أَخَافُ
اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ

अगर तुम मेरे क़त्ल के इरादे से मेरी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाओगे (तो खैर बढ़ाओ) (मगर) मैं तो तुम्हारे क़त्ल के ख्याल से अपना हाथ बढ़ाने वाला नहीं (क्योंकि) मैं तो उस खुदा से जो सारे जहाँ का पालने वाला है ज़रूर डरता हूँ

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿۱﴾ وَذَلِكَ جَزَاُ ۖ ﴿۲﴾ الظَّالِمِينَ
मैं तो ज़रूर ये चाहता हूँ कि मेरे गुनाह और तेरे गुनाह दोनों तेरे सर हो जाएँ तो तू (अच्छा खासा) जहन्नुमी बन जाए और ज़ालिमों की तो यही सज़ा है

فَطَوَّعَتْ لَهُ ﴿۱﴾ نَفْسُهُ ﴿۲﴾ قَتَلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ ۖ ﴿۳﴾ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخُسْرَيْنِ

फिर तो उसके नफ्स ने अपने भाई के क़त्ल पर उसे भड़का ही दिया आखिर उस (कम्बख्त ने) उसको मार ही डाला तो घाटा उठाने वालों में से हो गया

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا^۱ يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ^۲ كَيْفَ يُورِي سَوْءَةَ أَخِيهِ^۳ قَالَ
يُؤْيَلَتِي أَعْجِزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُورِيَ سَوْءَةَ أَخِي^۴ فَأَصْبَحَ مِنَ
الْندَمِينَ

(तब उसे फ़िक्र हुई कि लाश को क्या करे) तो खुदा ने एक कौवे को भेजा कि वह ज़मीन को कुरेदने लगा ताकि उसे (काबील) को दिखा दे कि उसे अपने भाई की लाश क्योंकर छुपानी चाहिए (ये देखकर) वह कहने लगा हाए अफ़सोस क्या मैं उस से भी आजिज़ हूँ कि उस कौवे की बराबरी कर सकूँ कि (बला से यह भी होता) तो अपने भाई की लाश छुपा देता अलगरज़ वह (अपनी हरकत से) बहुत पछताया

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ^۱ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا^۲ بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ^۳
فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا^۴ وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ
جَمِيعًا^۵ ۝ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا^۶ مِّنْهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ
لَمُسْرِفُونَ

इसी सबब से तो हमने बनी इसराईल पर वाज़िब कर दिया था कि जो शख्स किसी को न जान के बदले में और न मुल्क में फ़साद फैलाने की सज़ा में (बल्कि नाहक़) क़त्ल कर डालेगा तो गोया उसने सब लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने एक आदमी को ज़िला दिया तो गोया उसने सब लोगों को ज़िला लिया और उन (बनी इसराईल) के पास तो हमारे पैग़म्बर (कैसे कैसे) रौशन मौज़िज़े लेकर आ चुके हैं (मगर) फिर उसके बाद भी यक़ीनन उसमें से बहुतेरे ज़मीन पर ज्यादतियाँ करते रहे

إِنَّمَا جَزَاءُ^۱ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ^۲ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ
يُقْتَلُوا^۳ أَوْ يُصَلَّبُوا^۴ أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خَلْفٍ أَوْ يُنْفَوْا^۵ مِنَ الْأَرْضِ^۶ ۝
ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ^۷ فِي الدُّنْيَا^۸ وَلَهُمْ فِي آخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ

जो लोग खुदा और उसके रसूल से लड़ते भिड़ते हैं (और एहक़ाम को नहीं मानते) और फ़साद फैलाने की ग़रज़ से मुल्को (मुल्को) दौड़ते फिरते हैं उनकी सज़ा बस यही है कि (चुन चुनकर) या तो मार डाले जाएं या उन्हें सूली दे दी जाए या उनके हाथ पाँव हेर फेर कर एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाँव काट डाले जाएं या उन्हें (अपने वतन की) सरज़मीन से शहर बदर कर दिया जाए यह रूसवाई तो उनकी दुनिया में हुई और फिर आख़ेरत में तो उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब ही है

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا ۖ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ

मगर (हों) जिन लोगों ने इससे पहले कि तुम इनपर क़ाबू पाओ तौबा कर लो तो उनका गुनाह बख़्श दिया जाएगा क्योंकि समझ लो कि खुदा बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا ۚ فِي سَبِيلِهِ ۚ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

ऐ ईमानदारों खुदा से डरते रहो और उसके (तक़र्रब (क़रीब होने) के) ज़रिये की जुस्तजू में रहो और उसकी राह में जेहाद करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ ۚ مَعَهُ ۚ لَيَفْتَدُوا ۚ بِهِ ۚ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया अगर उनके पास ज़मीन में जो कुछ (माल खज़ाना) है (वह) सब बल्कि उतना और भी उसके साथ हो कि रोज़े क़यामत के अज़ाब का मुआवेज़ा दे दे (और खुद बच जाए) तब भी (उसका ये मुआवेज़ा) कुबूल न किया जाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوا ۚ مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخُرْجِينَ مِنْهَا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ

वह लोग तो चाहेंगे कि किसी तरह जहन्नुम की आग से निकल भागे मगर वहाँ से तो वह निकल ही नहीं सकते और उनके लिए तो दाएमी अज़ाब है

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا ۚ أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً ۚ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا ۚ مِنَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और चोर ख्वाह मर्द हो या औरत तुम उनके करतूत की सज़ा में उनका (दाहिना) हाथ काट डालो ये (उनकी सज़ा) खुदा की तरफ़ से है और खुदा (तो) बड़ा ज़बरदस्त हिकमत वाला है

فَمَنْ تَابَ مِنْ ۚ بَعْدِ ظُلْمِهِ ۚ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ

हाँ जो अपने गुनाह के बाद तौबा कर ले और अपने चाल चलन दुरुस्त कर लें तो बेशक खुदा भी तौबा कुबूल कर लेता है क्योंकि खुदा तो बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ ۚ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

ऐ शख्स क्या तू नहीं जानता कि सारे आसमान व ज़मीन (गरज़ दुनिया जहान) में खास खुदा की हुकूमत है जिसे चाहे अज़ाब करे और जिसे चाहे माफ़ कर दे और खुदा तो हर चीज़ पर कादिर है

ۚ يَأَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسْرِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا ۚ ءَامَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۚ سَمَّعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّعُونَ لِقَوْمٍ ءَاخِرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۚ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ ۚ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۚ يَقُولُونَ إِنِ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخُذُوهُ وَإِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَأَحْذَرُوا ۚ وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ ۚ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ ۚ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرْ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ وَلَهُمْ فِي ٱلْءَاخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ

ऐ रसूल जो लोग कुफ़र की तरफ़ लपक के चले जाते हैं तुम उनका ग़म न खाओ उनमें बाज़ तो ऐसे हैं कि अपने मुंह से बे तकल्लुफ़ कह देते हैं कि हम ईमान लाए हालाँकि उनके दिल बेईमान हैं और बाज़ यहूदी ऐसे हैं कि (जासूसी की गरज़ से) झूठी बातें बहुत (शौक से) सुनते हैं ताकि कुफ़रार के दूसरे गिरोह को जो (अभी तक) तुम्हारे पास नहीं आए हैं सुनाएं ये लोग (तौरैत के) अल्फ़ाज़ की उनके असली मायने (मालूम होने) के बाद भी तहरीफ़ करते हैं (और लोगों से) कहते हैं कि (ये तौरैत का हुक्म है) अगर मोहम्मद की तरफ़ से (भी) तुम्हें यही हुक्म दिया जाय तो उसे मान लेना और अगर यह हुक्म तुमको न दिया जाए तो उससे अलग ही रहना और (ऐ रसूल) जिसको खुदा ख़राब करना चाहता है तो उसके वास्ते खुदा से तुम्हारा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता यह लोग तो वही हैं जिनके दिलों को खुदा ने (गुनाहों से) पाक करने का इरादा ही नहीं किया (बल्कि) उनके लिए तो दुनिया में भी रूसवाई है और आख़ेरत में भी (उनके लिए) बड़ा (भारी) अज़ाब होगा

سَمْعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْلُونَ لِّلْسُحْتِ ۚ فَإِن جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ
وَإِن تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَن يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۚ وَإِن حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ

ये (कम्बख्त) झूठी बातों को बड़े शौक से सुनने वाले और बड़े ही हरामखोर हैं तो (ऐ रसूल) अगर ये लोग तुम्हारे पास (कोई मामला लेकर) आए तो तुमको इस्तेयार है ख्वाह उनके दरमियान फैसला कर दो या उनसे किनाराकशी करो और अगर तुम किनाराकश रहोगे तो (कुछ ख्याल न करो) ये लोग तुम्हारा हरगिज़ कुछ बिगाड़ नहीं सकते और अगर उनमें फैसला करो तो इन्साफ़ से फैसला करो क्योंकि खुदा इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है

وَكَيْفَ يُحْكِمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ ۚ بَعْدَ ذَلِكَ ۚ وَمَا
أُو۟لَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ

और जब खुद उनके पास तौरैत है और उसमें खुदा का हुक्म (मौजूद) है तो फिर तुम्हारे पास फैसला कराने को क्यों आते हैं और (लुत्फ़ तो ये है कि) इसके बाद फिर (तुम्हारे हुक्म से) फिर जाते हैं ओर सच तो यह है कि यह लोग ईमानदार ही नहीं हैं

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا ۚ لِلَّذِينَ
هَادُوا ۚ وَالرَّبَّيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا ۚ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ
شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَآخِشُونَ وَلَا تَشْتَرُوا بِأَيْتِي ثَمَنًا ۚ قَلِيلًا ۚ وَمَنْ
لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُو۟لَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ

बेशक हम ने तौरैत नाज़िल की जिसमें (लोगों की) हिदायत और नूर (ईमान) है उसी के मुताबिक़ खुदा के फ़रमाबरदार बन्दे (अम्बियाए बनी इसराईल) यहूदियों को हुक्म देते रहे और अल्लाह वाले और उलेमाए (यहूद) भी किताबे खुदा से (हुक्म देते थे) जिसके वह मुहाफ़िज़ बनाए गए थे और वह उसके गवाह भी थे पस (ऐ मुसलमानों) तुम लोगों से (ज़रा भी) न डरो (बल्कि) मुझ ही से डरो और मेरी आयतों के बदले में (दुनिया की दौलत जो दर हकीक़त बहुत थोड़ी कीमत है) न लो और (समझ लो कि) जो शख्स खुदा की नाज़िल की हुई (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ
وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن تَصَدَّقَ بِهِ ۚ فَهُوَ كَفَّارَةٌ ۚ لَهُ ۚ ۚ وَمَن
لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

और हम ने तौरत में यहूदियों पर यह हुक्म फर्ज कर दिया था कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और जख्म के बदले (वैसा ही) बराबर का बदला (जख्म) है फिर जो (मज़लूम ज़ालिम की) ख़ता माफ़ कर दे तो ये उसके गुनाहों का कफ़ारा हो जाएगा और जो शख्स खुदा की नाज़िल की हुई (किताब) के मुवाफ़िक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَرِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۚ وَآتَيْنَاهُ
الْإِنْجِيلَ فِيهِ هُدًى ۚ وَنُورٌ ۚ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى ۚ
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ

और हम ने उन्हीं पैग़म्बरों के क़दम ब क़दम मरियम के बेटे ईसा को चलाया और वह इस किताब तौरत की भी तस्दीक़ करते थे जो उनके सामने (पहले से) मौजूद थी और हमने उनको इन्ज़ील (भी) अता की जिसमें (लोगों के लिए हर तरह की) हिदायत थी और नूर (ईमान) और वह इस किताब तौरत की जो वक्ते नुज़ूले इन्ज़ील (पहले से) मौजूद थी तसदीक़ करने वाली और परहेज़गारों की हिदायत व नसीहत थी

وَلِيَحْكُمَ أَهْلُ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْفَاسِقُونَ

और इन्ज़ील वालों (नसारा) को जो कुछ खुदा ने (उसमें) नाज़िल किया है उसके मुताबिक़ हुक्म करना चाहिए और जो शख्स खुदा की नाज़िल की हुई (किताब के मुआफ़िक़) हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग बदकार हैं

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ۖ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۚ فَاسْتَبِقُوا ۚ الْخَيْرَاتِ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

और (ऐ रसूल) हमने तुम पर भी बरहक़ किताब नाज़िल की जो किताब (उसके पहले से) उसके वक्त में मौजूद है उसकी तसदीक करती है और उसकी निगेहबान (भी) है जो कुछ तुम पर खुदा ने नाज़िल किया है उसी के मुताबिक़ तुम भी हुक्म दो और जो हक़ बात खुदा की तरफ़ से आ चुकी है उससे कतरा के उन लोगों की ख्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और हमने तुम में हर एक के वास्ते (हस्बे मसलेहते वक्त) एक एक शरीयत और खास तरीक़े पर मुकर्रर कर दिया और अगर खुदा चाहता तो तुम सब के सब को एक ही (शरीयत की) उम्मत बना देता मगर (मुख्तलिफ़ शरीयतों से) खुदा का मतलब यह था कि जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारा इमतेहान करे बस तुम नेकी में लपक कर आगे बढ़ जाओ और (यक़ीन जानो कि) तुम सब को खुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है

وَأَنْ أَحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَأَحْذَرَهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَاعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ يُرِيدُ أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ

तब (उस वक्त) ज़िन बातों में तुम इख्तेलाफ़ करते वह तुम्हें बता देगा और (ऐ रसूल) हम फिर कहते हैं कि जो एहक़ाम खुदा नाज़िल किए हैं तुम उसके मुताबिक़ फैसला करो और उनकी (बेजा) ख्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो (बल्कि) तुम उनसे बचे रहो (ऐसा न हो) कि किसी हुक्म से जो खुदा ने तुम पर नाज़िल किया है तुमको ये लोग भटका दें फिर अगर ये लोग तुम्हारे हुक्म से मुंह मोड़ें तो समझ लो कि (गोया) खुदा ही की मरज़ी है कि उनके बाज़ गुनाहों की वजह से उन्हें मुसीबत में फँसा दे और इसमें तो शक़ ही नहीं कि बहुतेरे लोग बदचलन हैं

أَفْحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۚ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا ۖ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ

क्या ये लोग (ज़मानाए) जाहिलीयत के हुक्म की (तुमसे भी) तमन्ना रखते हैं हालाँकि यक़ीन करने वाले लोगों के वास्ते हुक्मे खुदा से बेहतर कौन होगा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَّخِذُوا ۚ الْيَهُودَ وَالنَّصْرَىٰ أَوْلِيَآءَ ۚ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَإِنَّهُ ۚ مِنْهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

ऐ ईमानदारों यहूदियों और नसरानियों को अपना सरपरस्त न बनाओ (क्योंकि) ये लोग (तुम्हारे मुखालिफ़ हैं मगर) बाहम एक दूसरे के दोस्त हैं और (याद रहे कि) तुममें से जिसने उनको अपना सरपरस्त बनाया पस फिर वह भी उन्हीं लोगों में से हो गया बेशक खुदा ज़ालिम लोगों को राहे रास्त पर नहीं लाता

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ ۖ يُسْرِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا دَآئِرَةٌ ۚ فَعَسَىٰ اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ ۖ مِّنْ عِنْدِهِ ۚ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرُوا ۚ فِي أَنْفُسِهِمْ نُدَمِينَ

तो (ऐ रसूल) जिन लोगों के दिलों में (नेफ़ाक़ की) बीमारी है तुम उन्हें देखोगे कि उनमें दौड़ दौड़ के मिले जाते हैं और तुमसे उसकी वजह यह बयान करते हैं कि हम तो इससे डरते हैं कि कहीं ऐसा न हो उनके न (मिलने से) ज़माने की गर्दिश में न मुब्तिला हो जाएं तो अनक़रीब ही खुदा (मुसलमानों की) फ़तेह या कोई और बात अपनी तरफ़ से ज़ाहिर कर देगा तब यह लोग इस बदगुमानी पर जो अपने जी में छिपाते थे शर्माएंगे (

وَيَقُولُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا ۚ بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَنِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَلُهُمْ فَأَصْبَحُوا ۚ خُسْرِينَ

और मोमिनीन (जब उन पर नेफ़ाक़ ज़ाहिर हो जाएगा तो) कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो सख्त से सख्त क़समें खाकर (हमसे) कहते थे कि हम ज़रूर तुम्हारे साथ हैं उनका सारा किया धरा अकारत हुआ और सख्त घाटे में आ गए

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ ۚ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ ۖ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۚ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ۚ ۚ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ

ऐ ईमानदारों तुममें से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो (कुछ परवाह नहीं फिर जाए) अनक़रीब ही खुदा ऐसे लोगों को ज़ाहिर कर देगा जिन्हें खुदा दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे ईमानदारों के साथ नर्म और मुन्किर (और) काफ़िरों के साथ सख्त खुदा की राह में जेहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत की कुछ परवाह न करेंगे ये खुदा का फ़ज़ल (व करम) है वह जिसे चाहता हे देता है और खुदा तो बड़ी गुन्जाइश वाला वाकिफ़कार है

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رُكْعُونَ

(ऐ ईमानदारों) तुम्हारे मालिक सरपरस्त तो बस यही हैं खुदा और उसका रसूल और वह मोमिनीन जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और हालत रूकूउ में ज़कात देते हैं

وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ

और जिस शख्स ने खुदा और रसूल और (उन्हीं) ईमानदारों को अपना सरपरस्त बनाया तो (खुदा के लश्कर में आ गया और) इसमें तो शक नहीं कि खुदा ही का लश्कर वर (ग़ालिब) रहता है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ لَا تَتَّخِذُوا ۖ الَّذِينَ اتَّخَذُوا ۖ دِينَكُمْ هُزُوءًا ۖ وَلَعِبًا ۖ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا ۖ الْكِتَابَ مِّن قَبْلِكُمْ وَالْكَفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۖ وَاتَّقُوا ۖ اللَّهَ ۖ إِنَّ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ

ऐ ईमानदारों जिन लोगों (यहूद व नसारा) को तुम से पहले किताबे (खुदा तौरित, इन्जील) दी जा चुकी है उनमें से जिन लोगों ने तुम्हारे दीन को हँसी खेल बना रखा है उनको और कुफ़र को अपना सरपरस्त न बनाओ और अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो खुदा ही से डरते रहो

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوءًا ۖ وَلَعِبًا ۖ ا ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ۖ لَا يَعْقِلُونَ

और (उनकी शरारत यहाँ तक पहुंची) कि जब तुम (अज़ान देकर) नमाज़ के वास्ते (लोगों को) बुलाते हो ये लोग नमाज़ को हँसी खेल बनाते हैं ये इस वजह से कि (लोग बिल्कुल बे अकल हैं) और कुछ नहीं समझते

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ

(ऐ रसूल अहले किताब से कहो कि) आखिर तुम हमसे इसके सिवा और क्या ऐब लगा सकते हो कि हम खुदा पर और जो (किताब) हमारे पास भेजी गयी है और जो हमसे पहले भेजी गयी ईमान लाए हैं और ये तुममें के अक्सर बदकार हैं

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذَلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ ؟ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ
وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطُّغُوتَ ؟ أَوْ لَّيْكَ شَرٌّ مَّكَانًا ؟ وَأَضَلُّ
عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तुम्हें खुदा के नज़दीक सज़ा में इससे कहीं बदतर ऐब बता दूँ (अच्छा लो सुनो) जिसपर खुदा ने लानत की हो और उस पर ग़ज़ब ढाया हो और उनमें से किसी को (मसख़ करके) बन्दर और (किसी को) सूअर बना दिया हो और (खुदा को छोड़कर) शैतान की परस्तिश की हो पस ये लोग दरजे में कहीं बदतर और राहे रास्त से भटक के सबसे ज्यादा दूर जा पहुंचे हैं

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا ءَامَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ؟ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ

और (मुसलमानों) जब ये लोग तुम्हारे पास आ जाते हैं तो कहते हैं कि हम तो ईमान लाए हैं हालाँकि वह कुफ़्र ही को साथ लेकर आए और फिर निकले भी तो साथ लिए हुए और जो नेफ़ाक़ वह छुपाए हुए थे खुदा उसे खूब जानता है

وَتَرَى كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسْرِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؟ لَبِئْسَ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ

(ऐ रसूल) तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह और सरकशी और हरामखोरी की तरफ़ दौड़ पड़ते हैं जो काम ये लोग करते थे वह यक़ीनन बहुत बुरा है

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؟ لَبِئْسَ مَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ

उनको अल्लाह वाले और उलेमा झूठ बोलने और हरामखोरी से क्यों नहीं रोकते जो (दरगुज़र) ये लोग करते हैं यक़ीनन बहुत ही बुरी है

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا ۚ بِمَا قَالُوا ۚ ۝ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلِيَزِيدَنَّ كَثِيرًا ۝ مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا ۝ وَكُفْرًا ۝ ۚ وَالْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ كُلَّمَا أَوقَدُوا نَارًا ۝ لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۝ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ

और यहूदी कहने लगे कि खुदा का हाथ बँधा हुआ है (बखील हो गया) उन्हीं के हाथ बाँध दिए जाएं और उनके (इस) कहने पर (खुदा की) फिटकार बरसे (खुदा का हाथ बँधने क्यों लगा) बल्कि उसके दोनों हाथ कुशादा हैं जिस तरह चाहता है खर्च करता है और जो (किताब) तुम्हारे पास नाज़िल की गयी है (उनका शक व हसद) उनमें से बहुतेरों को कुफ़्र व सरकशी को और बढ़ा देगा और (गोया) हमने खुद उनके आपस में रोज़े क़यामत तक अदावत और कीने की बुनियाद डाल दी जब ये लोग लड़ाई की आग भड़काते हैं तो खुदा उसको बुझा देता है और रूए ज़मीन में फ़साद फेलाने के लिए दौड़ते फिरते हैं और खुदा फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ ءَامَنُوا ۚ وَاتَّقَوْا ۚ لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ ۚ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ ءَامَنُوا ۚ وَاتَّقَوْا ۚ لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ ۚ

और अगर अहले किताब ईमान लाते और (हमसे) डरते तो हम ज़रूर उनके गुनाहों से दरगुज़र करते और उनको नेअमत व आराम (बेहिशत के बाग़ों में) पहुंचा देते

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا ۚ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْلُوا ۚ مِنْ فَوْقِهِمْ ۚ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ۚ ۝ ۚ مِنْهُمْ أُمَّةٌ ۚ مُّقْتَصِدَةٌ ۚ ۝ ۚ وَكَثِيرٌ ۚ مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ

और अगर यह लोग तौरैत और इन्ज़ील और (सहीफ़े) उनके पास उनके परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किये गए थे (उनके एहकाम को) क़ायम रखते तो ज़रूर (उनके) ऊपर से भी (रिज़क बरस पड़ता) और पाँवों के नीचे से भी उबल आता और (ये खूब चैन से) खाते उनमें से कुछ लोग तो एतदाल पर हैं (मगर) उनमें से बहुतेरे जो कुछ करते हैं बुरा ही करते हैं

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ ۚ ۚ
وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

ऐ रसूल जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है पहुंचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो (समझ लो कि) तुमने उसका कोई पैगाम ही नहीं पहुंचाया और (तुम डरो नहीं) खुदा तुमको लोगों के शर से महफूज़ रखेगा खुदा हरगिज़ काफ़िरों की क्रौम को मंज़िले मकसूद तक नहीं पहुंचाता

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُ عَلَىٰ شَيْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا ۚ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ
مِّن رَّبِّكُمْ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا ۚ وَكُفْرًا ۚ ۚ فَلَا
تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ अहले किताब जब तक तुम तौरत और इन्ज़ील और जो (सहीफ़े) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए हैं उनके (एहकाम) को क़ायम न रखोगे उस वक्त तक तुम्हारा मज़बह कुछ भी नहीं और (ऐ रसूल) जो (किताब) तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से भेजी गयी है (उसका) रश्क (हसद) उनमें से बहुतेरों की सरकशी व कुफ़्र को और बढ़ा देगा तुम काफ़िरों के गिरोह पर अफ़सोस न करना

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَالَّذِينَ هَادُوا ۚ وَالصَّبِئُونَ وَالنَّصَارَىٰ مِنْ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ ۚ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

इसमें तो शक ही नहीं कि मुसलमान हो या यहूदी हकीमाना ख्याल के पाबन्द हों ख्वाह नसरानी (गरज़ कुछ भी हो) जो खुदा और रोज़े क़यामत पर ईमान लाएगा और अच्छे (अच्छे) काम करेगा उन पर अलबत्ता न तो कोई खौफ़ होगा न वह लोग आज़ुर्दा खातिर होंगे

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ رُسُلًا ۚ ۚ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ ۚ ۚ بِمَا لَا
تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا ۚ ۚ كَذَّبُوا ۚ ۚ وَفَرِيقًا ۚ ۚ يَقْتُلُونَ

हमने बनी इसराईल से एहद व पैमान ले लिया था और उनके पास बहुत रसूल भी भेजे थे (इस पर भी) जब उनके पास कोई रसूल उनकी मर्जी के खिलाफ़ हुक्म लेकर आया तो इन (कम्बख्त) लोगों ने किसी को झुठला दिया और किसी को क़त्ल ही कर डाला

وَحَسِبُوا ۚ أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةً ۚ فَعَمُوا ۚ وَصَمُوا ۚ ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا ۚ وَصَمُوا ۚ كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۚ بِمَا يَعْمَلُونَ

और समझ लिया कि (इसमें हमारे लिए) कोई खराबी न होगी पस (गोया) वह लोग (अम्र हक़ से) अंधे और बहरे बन गए (मगर बावजूद इसके) जब इन लोगों ने तौबा की तो फिर खुदा ने उनकी तौबा कुबूल कर ली (मगर) फिर (इस पर भी) उनमें से बहुतेरे अंधे और बहरे बन गए और जो कुछ ये लोग कर रहे हैं अल्लाह तो देखता है

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ وَقَالَ الْمَسِيحُ يُبْنَىٰٓ إِبْرَاهِيمَ ۚ أَعْبُدُوا ۚ اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۚ

जो लोग उसके कायल हैं कि मरियम के बेटे ईसा मसीह खुदा हैं वह सब काफ़िर हैं हालाँकि मसीह ने खुद यूँ कह दिया था कि ऐ बनी इसराईल सिर्फ उसी खुदा की इबादत करो जो हमारा और तुम्हारा पालने वाला है क्योंकि (याद रखो) जिसने खुदा का शरीक बनाया उस पर खुदा ने बेहिश्त को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना जहन्नुम है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۚ وَمَا مِنْ إِلَهِ إِلَّا إِلَهُ ۚ وَحِذُّ ۚ وَإِنْ لَّمْ يَنْتَهُوا ۚ عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

जो लोग इसके कायल हैं कि खुदा तीन में का (तीसरा) है वह यक्रीनन काफ़िर हो गए (याद रखो कि) खुदाएँ यकता के सिवा कोई माबूद नहीं और (खुदा के बारे में) ये लोग जो कुछ बका करते हैं अगर उससे बाज़ न आए तो (समझ रखो कि) जो लोग उसमें से (काफ़िर के) काफ़िर रह गए उन पर ज़रूर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल होगा

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

तो ये लोग खुदा की बारगाह में तौबा क्यों नहीं करते और अपने (कसूरों की) माफ़ी क्यों नहीं माँगते हालाँकि खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ ۖ صِدِّيقَةٌ ۚ ۚ
كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۚ ۚ أَنْظِرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَنِّي يُؤْفَكُونَ

मरियम के बेटे मसीह तो बस एक रसूल हैं और उनके क़ब्ल (और भी) बहुतेरे रसूल गुज़र चुके हैं और उनकी माँ भी (खुदा की) एक सच्ची बन्दी थी (और आदमियों की तरह) ये दोनों (के दोनों भी) खाना खाते थे (ऐ रसूल) शौर तो करो हम अपने एहकाम इनसे कैसा साफ़ साफ़ बयान करते हैं

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا ۖ وَلَا نَفْعًا ۚ ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ

फिर देखो तो कि (उसपर भी उलटे) ये लोग कहाँ भटके जा रहे हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम खुदा (जैसे क़ादिर व तवाना) को छोड़कर (ऐसी ज़लील) चीज़ की इबादत करते हो जिसको न तो नुक़सान ही इस्तेयार है और न नफ़े का और खुदा तो (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है

قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا ۚ فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا ۚ أَهْوَاءَ قَوْمٍ ۚ قَدْ
ضَلُّوا ۚ مِنْ قَبْلُ وَأَضَلُّوا ۚ كَثِيرًا ۚ ۚ وَضَلُّوا ۚ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ

ऐ रसूल तुम कह दो कि ऐ अहले किताब तुम अपने दीन में नाहक़ ज्यादाती न करो और न उन लोगों (अपने बुज़ुर्गों) की नफ़सियानी ख्वाहिशों पर चलो जो पहले खुद ही गुमराह हो चुके और (अपने साथ और भी) बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा और राहे रास्त से (दूर) भटक गए

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنَ ۚ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ ۚ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ۚ ذَلِكَ
بِمَا عَصَوْا ۚ وَكَانُوا ۚ يَعْتَدُونَ

बनी इसराईल में से जो लोग काफ़िर थे उन पर दाऊद और मरियम के बेटे ईसा की ज़बानी लानत की गयी ये (लानत उन पर पड़ी तो सिर्फ़) इस वजह से कि (एक तो) उन लोगों ने नाफ़रमानी की और (फिर हर मामले में) हद से बढ़ जाते थे

كَانُوا ۚ لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ ۚ فَعَلُوهُ ۚ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا ۚ يَفْعَلُونَ

और किसी बुरे काम से जिसको उन लोगों ने किया बाज़ न आते थे (बल्कि उस पर बावजूद नसीहत अड़े रहते) जो काम ये लोग करते थे क्या ही बुरा था

تَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ أَن سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ

(ऐ रसूल) तुम उन (यहूदियों) में से बहुतेरों को देखोगे कि कुफ़रार से दोस्ती रखते हैं जो सामान पहले से उन लोगों ने खुद अपने वास्ते दुरुस्त किया है किस क्रूर बुरा है (जिसका नतीजा ये है) कि (दुनिया में भी) खुदा उन पर गज़बनाक हुआ और (आख़ेरत में भी) हमेशा अज़ाब ही में रहेंगे

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ فَسِقُونَ

और अगर ये लोग खुदा और रसूल पर और जो कुछ उनपर नाज़िल किया गया है ईमान रखते हैं तो हरगिज़ (उनको अपना) दोस्त न बनाते मगर उनमें के बहुतेरे तो बदचलन हैं

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدُوَّةً ۚ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً ۚ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ الَّذِينَ قَالُوا ۚ إِنَّا نَصْرِي ۚ ذَلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِيَسِينَ وَرُهَبَانًا ۚ وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ

(ऐ रसूल) ईमान लाने वालों का दुश्मन सबसे बढ़के यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ईमानदारों का दोस्ती में सबसे बढ़के करीब उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं क्योंकि इन (नसारा) में से यकीनी बहुत से आमिल और आबिद हैं और इस सबब से (भी) कि ये लोग हरगिज़ शेखी नहीं करते

وَإِذَا سَمِعُوا ۚ مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا ۚ مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُولُونَ رَبَّنَا ءَامَنَّا فَآكُتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ

और तू देखता है कि जब यह लोग (इस कुरान) को सुनते हैं जो हमारे रसूल पर नाज़िल किया गया है तो उनकी आँखों से बेसाख़्ता (छलक कर) आँसू जारी हो जातें हैं क्योंकि उन्होंने (अम्र) हक़ को पहचान लिया है (और) अर्ज़ करते हैं कि ऐ मेरे पालने वाले हम तो ईमान ला चुके तो (रसूल की) तसदीक़ करने वालों के साथ हमें भी लिख रख

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ
الصَّالِحِينَ

और हमको क्या हो गया है कि हम खुदा और जो हक़ बात हमारे पास आ चुकी है उस पर तो ईमान न लाएँ और (फिर) खुदा से उम्मीद रखें कि वह अपने नेक बन्दों के साथ हमें (बेहिश्त में) पहुँचा ही देगा

فَأَثْبَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا ۚ جَنَّتِ ۚ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خُلِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ
الْمُحْسِنِينَ

तो खुदा ने उन्हें उनके (सदक़ दिल से) अर्ज़ करने के सिले में उन्हें वह (हरे भरे) बागात अता फरमाए जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरें जारी हैं (और) वह उसमें हमेशा रहेंगे और (सदक़ दिल से) नेकी करने वालों का यही ऐवज़ है

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

और जिन लोगों ने कुफ़्र एख़्तियार किया और हमारी आयतों को झुठलाया यही लोग जहन्नुमी हैं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تُحَرِّمُوا ۚ طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ

ऐ ईमानदार जो पाक चीज़ें खुदा ने तुम्हारे वास्ते हलाल कर दी हैं उनको अपने ऊपर हराम न करो और हद से न बढ़ो क्योंकि खुदा हद से बढ़ जाने वालों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता

وَكُلُوا ۚ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَّالًا ۚ طَيِّبًا ۚ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ ۚ مُؤْمِنُونَ

और जो हलाल साफ़ सुथरी चीज़ें खुदा ने तुम्हें दी हैं उनको (शौक़ से) खाओ और जिस खुदा पर तुम ईमान लाए हो उससे डरते रहो

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْمَانَ ۖ فَكَفَرْتُمْ ۖ^٩
 إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ
 رَقَبَةٍ ۖ ۖ ۖ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۖ ۖ ۖ ذَلِكَ كَفْرَةٌ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۖ^٩
 وَأَحْفَظُوا ۖ ۖ ۖ أَيْمَانَكُمْ ۖ ۖ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ ءَايَاتِهِ ۖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

खुदा तुम्हारे बेकार (बेकार) कसमों (के खाने) पर तो खैर गिरफ्तार न करेगा मगर बाक़सद (सच्ची) पक्की कसम खाने और उसके खिलाफ करने पर तो ज़रूर तुम्हारी ले दे करेगा (लो सुनो) उसका जुर्माना जैसा तुम खुद अपने एहलोअयाल को खिलाते हो उसी क्रिस्म का औसत दर्जे का दस मोहताजों को खाना खिलाना या उनको कपड़े पहनाना या एक गुलाम आज़ाद करना है फिर जिससे यह सब न हो सके तो मैं तीन दिन के रोज़े (रखना) ये (तो) तुम्हारी कसमों का जुर्माना है जब तुम कसम खाओ (और पूरी न करो) और अपनी कसमों (के पूरा न करने) का ख्याल रखो खुदा अपने एहकाम को तुम्हारे वास्ते यूँ साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ ۖ ۖ إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلُمُ رِجْسٌ ۖ ۖ ۖ مِنْ عَمَلِ
 الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

ऐ ईमानदारों शराब, जुआ और बुत और पाँसे तो बस नापाक (बुरे) शैतानी काम हैं तो तुम लोग इससे बचे रहो ताकि तुम फलाह पाओ

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدُوَّةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ
 عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ ۖ ۖ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ

शैतान की तो बस यही तमन्ना है कि शराब और जुए की बदौलत तुममें बाहम अदावत व दुश्मनी डलवा दे और खुदा की याद और नमाज़ से बाज़ रखे तो क्या तुम उससे बाज़ आने वाले हो

وَأَطِيعُوا ۖ ۖ ۖ اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ ۖ ۖ الرَّسُولَ وَأَحْذَرُوا ۖ ۖ ۖ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا ۖ ۖ ۖ أَنَّمَا عَلَى
 رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ

और खुदा का हुक्म मानों और रसूल का हुक्म मानों और (नाफ़रमानी) से बचे रहो इस पर भी अगर तुमने (हुक्म खुदा से) मुँह फेरा तो समझ रखो कि हमारे रसूल पर बस साफ़ साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना फर्ज है

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ ۙ فِيمَا طَعِمُوا ۚ إِذَا مَا اتَّقَوْا ۙ
وَعَامَنُوا ۙ الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا ۙ وَعَامَنُوا ۙ ثُمَّ اتَّقَوْا ۙ وَأَحْسَنُوا ۙ وَاللَّهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

(फिर करो चाहे न करो तुम मुखतार हो) जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए हैं उन पर जो कुछ खा
(पी) चुके उसमें कुछ गुनाह नहीं जब उन्होंने परहेज़गारी की और ईमान ले आए और अच्छे (अच्छे) काम किए फिर
परहेज़गारी की और नेकियाँ कीं और खुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۙ لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ ۙ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُ ۙ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ ۙ بِالْغَيْبِ ۙ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ ۙ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۙ

ऐ ईमानदारों कुछ शिकार से जिन तक तुम्हारे हाथ और नैजें पहुँच सकते हैं खुदा ज़रूर इस्तेहान करेगा ताकि खुदा देख ले कि
उससे बे देखे भाले कौन डरता है फिर उसके बाद भी जो ज्यादाती करेगा तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۙ لَا تَقْتُلُوا ۙ الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ ۙ وَمَن قَتَلَهُ ۙ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا ۙ
فَجَزَاءٌ ۙ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ۙ ذَوَا عَدْلٍ ۙ مِنْكُمْ هَدْيًا ۙ بَلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ
كَفْرَةً ۙ طَعَامٌ مَّسْكِينٍ أَوْ عَدْلُ ذَلِكَ صِيَامًا ۙ لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ ۙ عَفَا اللَّهُ عَمَّا
سَلَفَ ۙ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ ۙ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ۙ ذُو انْتِقَامٍ

(ऐ ईमानदारों जब तुम हालते एहराम में हो तो शिकार न मारो और तुममें से जो कोई जान बूझ कर शिकार मारेगा तो जिस
(जानवर) को मारा है चौपायों में से उसका मसल तुममें से जो दो मुन्सिफ आदमी तजवीज़ कर दें उसका बदला (देना) होगा
(और) काबा तक पहुँचा कर कुर्बानी की जाए या (उसका) जुर्माना (उसकी क्रीमत से) मोहताजों को खाना खिलाना या उसके
बराबर रोज़े रखना (यह जुर्माना इसलिए है) ताकि अपने किए की सज़ा का मज़ा चखो जो हो चुका उससे तो खुदा ने दरगुज़र
की और जो फिर ऐसी हरकत करेगा तो खुदा उसकी सज़ा देगा और खुदा ज़बरदस्त बदला लेने वाला है

أَحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ[؟] مَتَّعًا[؟] لَكُمْ وَالسَّيَّارَةَ[؟] وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ
مَا دُمْتُمْ حُرُمًا[؟] وَأَتَّقُوا[؟] اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

तुम्हारे और काफ़िले के वास्ते दरियाई शिकार और उसका खाना तो (हर हालत में) तुम्हारे वास्ते जायज़ कर दिया है मगर
खुशकी का शिकार जब तक तुम हालते एहराम में रहो तुम पर हराम है और उस खुदा से डरते रहो जिसकी तरफ (मरने के बाद)
उठाए जाओगे

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا[؟] لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ
وَالْقَلِيدَ[؟] ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا[؟] أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

खुदा ने काबा को जो (उसका) मोहतरम घर है और हुसमत दार महीनों को और कुरबानी को और उस जानवर को जिसके गले में
(कुरबानी के वास्ते) पट्टे डाल दिए गए हों लोगों के अमन कायम रखने का सबब करार दिया यह इसलिए कि तुम जान लो कि
खुदा जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है यक़ीनन (सब) जानता है और ये भी (समझ लो) कि बेशक खुदा हर
चीज़ से वाक़िफ़ है

أَعْلَمُوا[؟] أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ[؟] رَحِيمٌ[؟]

जान लो कि यक़ीनन खुदा बड़ा अज़ाब वाला है और ये (भी) कि बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ[؟] وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ

(हमारे) रसूल पर पैग़ाम पहुँचा देने के सिवा (और) कुछ (फर्ज़) नहीं और जो कुछ तुम ज़ाहिर बा ज़ाहिर करते हो और जो कुछ
तुम छुपा कर करते हो खुदा सब जानता है

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ[؟] فَاتَّقُوا[؟] اللَّهَ يَأُو[؟] إِلَى
الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُونَ

(ऐ रसूल) कह दो कि नापाक (हराम) और पाक (हलाल) बराबर नहीं हो सकता अगरचे नापाक की कसरत तुम्हें भला क्यों न
मालूम हो तो ऐसे अक्लमन्दों अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाब रहो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَسْأَلُوا ۚ عَنْ أَشْيَاءَ إِن تُبَدَّ لَكُمْ تَسْأَلُكُمْ وَإِن تَسْأَلُوا ۚ عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْءَانُ تُبَدَّ لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۚ

ऐ ईमान वालों ऐसी चीजों के बारे में (रसूल से) न पूछा करो कि अगर तुमको मालूम हो जाए तो तुम्हें बुरी मालूम हो और अगर उनके बारे में कुरान नाज़िल होने के वक्त पूछ बैठोगे तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएगी (मगर तुमको बुरा लगेगा जो सवालात तुम कर चुके) खुदा ने उनसे दरगुज़र की और खुदा बड़ा बख़्शने वाला बुर्दबार है

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ ۚ مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا ۚ بِهَا كُفْرِينَ

तुमसे पहले भी लोगों ने इस किस्म की बातें (अपने वक्त के पैग़म्बरों से) पूछी थीं

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ ۚ بِحِيرَةٍ ۚ وَلَا سَائِبَةٍ ۚ وَلَا وَصِيلَةٍ ۚ وَلَا حَامٍ ۚ ۚ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

फिर (जब बरदाश्त न हो सका तो) उसके मुन्किर हो गए खुदा ने न तो कोई बहिरा (कान फटी ऊँटनी) मुकर्रर किया है न सायवा (साँढ़) न वसीला (जुडवा बच्चे) न हाम (बुढ़ा साँढ़) मुकर्रर किया है मगर कुफ़ार खुदा पर ख्वाह मा ख्वाह झूठ (मूठ) बोहतान बाँधते हैं और उनमें के अक्सर नहीं समझते

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا ۚ إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا ۚ حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ ءَابَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ ءَابَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا ۚ وَلَا يَهْتَدُونَ

और जब उनसे कहा जाता है कि जो (कुरान) खुदा ने नाज़िल फरमाया है उसकी तरफ और रसूल की आओ (और जो कुछ कहे उसे मानों तो कहते हैं कि हमने जिस (रंग) में अपने बाप दादा को पाया वही हमारे लिए काफी है क्या (ये लोग लकीर के फकीर ही रहेंगे) अगरचे उनके बाप दादा न कुछ जानते ही हों न हिदायत ही पायी हो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مِّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

ऐ ईमान वालों तुम अपनी ख़बर लो जब तुम राहे रास्त पर हो तो कोई गुमराह हुआ करे तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता तुम सबके सबको खुदा ही की तरफ लौट कर जाना है तब (उस वक्त नेक व बद) जो कुछ (दुनिया में) करते थे तुम्हें बता देगा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ شَهِدَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ
 ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ ءَاخِرَانِ مِّنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصْبَحْتُمْ
 مَصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ ۚ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنْ أَرْتَبْتُمْ لَا
 نَشْتَرِي بِهِ ۚ ثُمَّ ۚ ا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ وَلَا نَكْتُمُ شَهِدَةَ اللَّهِ إِنَّآ إِذْ ۚ ا لَمِنَ آلِ ءَاثِمِينَ

ऐ ईमान वालों जब तुममें से किसी (के सर) पर मौत खड़ी हो तो वसीयत के वक्त तुम (मोमिन) में से दो आदिलों की गवाही होनी ज़रूरी है और जब तुम इत्तेफाकन कहीं का सफर करो और (सफर ही में) तुमको मौत की मुसीबत का सामना हो तो (भी) दो गवाह ग़ैर (मोमिन) सही (और) अगर तुम्हें शक हो तो उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो फिर वह दोनों खुदा की क़सम खाएँ कि हम इस (गवाही) के (ऐवज़ कुछ दाम नहीं लेंगे अगरचे हम जिसकी गवाही देते हैं हमारा अज़ीज़ ही क्यों न) हो और हम खुदा लगती गवाही न छुपाएँगे अगर ऐसा करें तो हम बेशक गुनाहगार हैं

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا أَسْتَحَقَّ إِثْمًا ۚ ا فَأَخْرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ أَسْتَحَقَّ
 عَلَيْهِمُ الْأَوَّلِينَ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهِدْتِنَا أَحَقُّ مِنْ شَهِدَتِهِمَا وَمَا أَعْتَدَيْنَا إِنَّآ إِذْ ۚ ا
 لَمِنَ الظَّالِمِينَ

अगर इस पर मालूम हो जाए कि वह दोनों (दरोगा हलफ़ी (झूठी कसम) से) गुनाह के मुस्तहक़ हो गए तो दूसरे दो आदमी उन लोगों में से जिनका हक़ दबाया गया है और (मय्यत) के ज्यादा कराबतदार हैं (उनकी तरवीद में) उनकी जगह खड़े हो जाएँ फिर दो नए गवाह खुदा की क़सम खाएँ कि पहले दो गवाहों की निस्बत हमारी गवाही ज्यादा सच्ची है और हमने (हक़) नहीं छुपाया और अगर ऐसा किया हो तो उस वक्त बेशक हम ज़ालिम हैं

ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يَأْتُوا ۚ بِالشَّهَدَةِ عَلَىٰ وَجْهٍ أَوْ يَخَافُوا ۚ ا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَنُ ۚ ا بَعْدَ
 أَيْمَنِهم ۚ ا وَاتَّقُوا ۚ ا اللَّهَ وَأَسْمَعُوا ۚ ا ۚ ا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

ये ज्यादा करीन क़यास है कि इस तरह पर (आख़रत के डर से) ठीक ठीक गवाही दें या (दुनिया की रूसवाई का) अन्देशा हो कि कहीं हमारी क़समें दूसरे फ़रीक़ की क़समों के बाद रद न कर दी जाएँ मुसलमानों खुदा से डरो और (जी लगा कर) सुन लो और खुदा बदचलन लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाता

﴿ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ ﴾ ﴿ قَالُوا ﴾ لَا عِلْمَ لَنَا ﴿ إِنَّكَ أَنْتَ عَْلَمُ

الْغُيُوبِ

(उस वक्त को याद करो) जिस दिन खुदा अपने पैग़म्बरों को जमा करके पूछेगा कि (तुम्हारी उममत की तरफ से तबलीग़े एहकाम का) क्या जवाब दिया गया तो अर्ज करेंगे कि हम तो (चन्द ज़ाहिरी बातों के सिवा) कुछ नहीं जानते तू तो खुद बड़ा ग़ैब वॉ है

إِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَلَدَتِكَ إِذْ أُيِّدْتُكَ بِرُوحِ
الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ﴿ ١ ﴾ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ
وَالْإِنْجِيلَ ﴿ ٢ ﴾ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا ﴿ ٣ ﴾
بِإِذْنِي ﴿ ٤ ﴾ وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ﴿ ٥ ﴾ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي ﴿ ٦ ﴾ وَإِذْ كَفَفْتُ
بَنِي إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ ٧ ﴾ مِنْهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ ﴿ ٨ ﴾
مُبِينٌ ﴿ ٩ ﴾

(वह वक्त याद करो) जब खुदा फरमाएगा कि ये मरियम के बेटे ईसा हमने जो एहसानात तुम पर और तुम्हारी माँ पर किये उन्हें याद करो जब हमने रूहुलकुदूस (जिबरील) से तुम्हारी ताईद की कि तुम झूले में (पड़े पड़े) और अधेड़ होकर (शक़ सा बातें) करने लगे और जब हमने तुम्हें लिखना और अक़ल व दानाई की बातें और (तौरैत व इन्जील (ये सब चीजे) सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से चिड़िया की मूरत बनाते फिर उस पर कुछ दम कर देते तो वह मेरे हुक्म से (सचमुच) चिड़िया बन जाती थी और मेरे हुक्म से मादरज़ाद (पैदायशी) अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे और जब तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा (करके क़ब्रों से) निकाल खड़ा करते थे और जिस वक्त तुम बनी इसराईल के पास मौजिज़े लेकर आए और उस वक्त मैंने उनको तुम (पर दस्त दराज़ी करने) से रोका तो उनमें से बाज़ कुफ़्फ़ार कहने लगे ये तो बस खुला हुआ जादू है

وَإِذْ أُوحِيَتْ إِلَى الْحَوَارِيِّ ﴿ ١ ﴾ أَنْ ءَامِنُوا ﴿ ٢ ﴾ بِي وَبِرِسُولِي قَالُوا ﴿ ٣ ﴾ ءَامَنَّا وَأَشْهَدُ بِأَنَّنَا
مُسْلِمُونَ

और जब मैंने हवारियों से इलहाम किया कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो अर्ज करने लगे हम ईमान लाए और तू गवाह रहना कि हम तेरे फरमाबरदार बन्दे हैं

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً؟^١ مِّنَ السَّمَاءِ؟^٢ قَالَ اتَّقُوا^٣ اللَّهَ إِنَّ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ

(वह वक्त याद करो) जब हवारीयों ने ईसा से अर्ज की कि ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या आप का खुदा उस पर कादिर है कि हम पर आसमान से (नेअमत की) एक ख्वान नाज़िल फरमाए ईसा ने कहा अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो खुदा से डरो (ऐसी फरमाइश जिसमें इस्तेहान मालूम हो न करो)

قَالُوا^١ نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ

वह अर्ज करने लगे हम तो फकत ये चाहते हैं कि इसमें से (बरतकन) कुछ खाएँ और हमारे दिल को (आपकी रिसालत का पूरा पूरा) इत्मेनान हो जाए और यक़ीन कर लें कि आपने हमसे (जो कुछ कहा था) सच फरमाया था और हम लोग इस पर गवाह रहें

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً^١ مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا^٢ لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً^٣ مِّنكَ^٤ وَأَرْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

(तब) मरियम के बेटे ईसा ने (बारगाहे खुदा में) अर्ज की खुदा वन्दा ऐ हमारे पालने वाले हम पर आसमान से एक ख्वान (नेअमत) नाज़िल फरमा कि वह दिन हम लोगों के लिए हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछ्लों के लिए ईद का करार पाए (और हमारे हक़ में) तेरी तरफ से एक बड़ी निशानी हो और तू हमें रोज़ी दे और तू सब रोज़ी देने वालो से बेहतर है

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنْزِلُهَا عَلَيْكُمْ^١ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ^٢ عَذَابًا^٣ لَا أُعَذِّبُهُ^٤ أَحَدًا^٥ مِّنَ الْعَالَمِينَ

खुदा ने फरमाया मैं ख्वान तो तुम पर ज़रूर नाज़िल करूँगा (मगर याद रहे कि) फिर तुममें से जो भी शरूख़ उसके बाद काफ़िर हुआ तो मैं उसको यक़ीन ऐसे सख्त अज़ाब की सज़ा दूँगा कि सारी खुदायी में किसी एक पर भी वैसा (सख्त) अज़ाब न करूँगा

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّي إِلَهَيْنِ مِنْ دُونِ
 اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَنكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۖ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ ۖ فَقَدْ
 عَلِمْتَهُ ۖ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

और (वह वक्त भी याद करो) जब क़यामत में ईसा से खुदा फरमाएगा कि (क्यों) ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या तुमने लोगों से ये कह दिया था कि खुदा को छोड़कर मुझे को और मेरी माँ को खुदा बना लो ईसा अर्ज़ करेंगे सुबहान अल्लाह मेरी तो ये मज़ाल न थी कि मैं ऐसी बात मुँह से निकालूँ जिसका मुझे कोई हक़ न हो (अच्छा) अगर मैंने कहा होगा तो तुझको ज़रूर मालूम ही होगा क्योंकि तू मेरे दिल की (सब बात) जानता है हाँ अलबत्ता मैं तेरे जी की बात नहीं जानता (क्योंकि) इसमें तो शक़ ही नहीं कि तू ही ग़ैब की बातें खूब जानता है

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ ۖ أَنِ اعْبُدُوا ۖ اللَّهُ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ
 شَهِيدًا ۚ مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۖ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ
 شَيْءٍ شَهِيدٌ

तूने मुझे जो कुछ हुक्म दिया उसके सिवा तो मैंने उनसे कुछ भी नहीं कहा यही कि खुदा ही की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा सबका पालने वाला है और जब तक मैं उनमें रहा उन की देखभाल करता रहा फिर जब तूने मुझे (दुनिया से) उठा लिया तो तू ही उनका निगेहबान था और तू तो खुद हर चीज़ का गवाह (मौजूद) है

إِنْ تَعَذَّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

तू अगर उन पर अज़ाब करेगा तो (तू मालिक है) ये तेरे बन्दे हैं और अगर उन्हें बख़्श देगा तो (कोई तेरा हाथ नहीं पकड़ सकता क्योंकि) बेशक तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۖ لَهُمْ جَنَّاتٌ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
 خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا ۖ عَنْهُ ۖ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

खुदा फरमाएगा कि ये वह दिन है कि सच्चे बन्दों को उनकी सच्चाई (आज) काम आएगी उनके लिए (हरे भरे बेहिश्त के) वह बाग़ात है जिनके (दरख्तों के) नीचे नहरे जारी हैं (और) वह उसमें अबादुल आबाद तक रहेंगे खुदा उनसे राज़ी और वह खुदा से खुश यही बहुत बड़ी कामयाबी है

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْاَرْضِ وَمَا فِیْهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌۙ

सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है सब खुदा ही की सल्तनत है और वह हर चीज़ पर कादिर (व तवाना) है